अभियान

यौनिकता और हम

जया शर्मा

"जब भी मैं यौनिकता शब्द के बारे में सुनती ... कुछ अजीब सा महसूस होता... पहली कार्यशाला के दौरान मुझे शर्मिंदगी महसूस हुई, पर उत्सुकता भी। कुछ चीज़ों को मैंने अजीब सा पाया, लेकिन भीतर से अच्छा भी महसूस हुआ ... चूंकि विभिन्न क्रियाओं के बारे में, हम लोगों के शरीर के बारे में और हमारे जीवन के बारे में होने वाली बहसें इतनी खुलेपन के साथ हो रही थीं। ... मैंने महसूस किया कि ऐसी बातें और जानकारियों तक दूसरों की पहुंच नहीं है। हमारे संगठन में आमतौर पर लोग कहा करते थे कि इस किस्म की बातें 'गंदी बातें' हैं। हम लोगों ने सोचा था कि गांव में रहने वाली महिलाओं से इस तरह की बातें करने पर हमें खराब प्रतिक्रिया मिलेगी और वो हमारी पिटाई कर डालेंगी! लेकिन सच्चाई तो यह है कि वे किसी न किसी तरह से सेक्स के बारे में बातें करती हैं। शादी-ब्याह के मौकों पर या होली के त्योहार पर वे गंदे गाने गाती हैं। लेकिन वैसे इस तरह के विषय पर वे खुलकर बातें नहीं कर सकतीं।"

केसरीबाई 'यौनिकता और हम' कार्यक्रम में हिस्सा लेने वाले प्रतिभागियों में से एक थी। इस कार्यक्रम का उद्देश्य था यौनिकता के मुद्दों पर समुदाय स्तर पर काम कर रहे संगठनों की समझ गहरी करना। ये पांच संगठन थे — *महिला जन अधिकार समिति, राजस्थान; महिला समाख्या, बिहार; वनांगना, उत्तर प्रदेश; ग्रामोन्नति, उत्तर प्रदेश और एक्शन इंडिया, नई दिल्ली।* इस कार्यक्रम को *निरंतर, दिल्ली* ने आयोजित किया था। निरंतर एक गैर सरकारी महिला संगठन है जो अपने प्रारंभिक काल, 1993 से जेंडर और शिक्षा के मुद्दों और यौनिकता के मुद्दों पर 2007 से काम कर रहा है। इस कार्यक्रम की खासियत यह थी कि यौनिकता के मुद्दों पर ग्रामीण व गरीब समुदाय की महिलाओं और संस्थाओं के कार्यकर्ता - दोनों के बीच सघन रूप से काम किया गया। हर संस्था ने कम से कम पांच कार्यशालाओं में भाग लिया।

'यौनिकता और हम' नामक इस कार्यक्रम की पहलकदमी एक ऐसे संदर्भ से उपजी थी जिसके तहत गरीब समुदाय की महिलाओं के अधिकारों से जुड़े प्रयासों में यौन अधिकारों के बारे में बात करने की कोई प्रवृत्ति नहीं दिखती है। इसकी एक खास वजह यह है कि अक्सर अधिकारों को एक दर्जाबंदी के खांचे में रखा जाता है। इस दर्जाबंदी में गरीबी और महिलाओं के ख़िलाफ़ हिंसा से जुड़े मुद्दे सबसे ऊपरी पायदान पर हैं। यौनिकता जैसे अधिकारों को दर्जाबंदी के सबसे निचले पायदान पर ढकेल दिया जाता है। ये प्रवृत्ति गरीबों के प्रति एक खास रवैये की झलक दिखलाती है जो मानता है कि गरीब लोगों की यौनिक ज़रूरतें हैं ही नहीं।

इस संदर्भ से उपजे 'यौनिकता और हम' कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य थे, यौनिकता पर एक सकारात्मक और राजनैतिक समझ विकसित करना, समुदाय स्तर पर काम में यौनिकता के महत्व को समझना और संस्थाओं में यौनिकता से जुड़े प्रशिक्षण आयोजित कर पाने की तैयारी करना।

कार्यशालाओं में जो विषय लिए गए उनमें निम्न शामिल थे —

यौनिकता क्या है? यौनिकता से जुड़े कायदे क्या हैं? इनका जेंडर, जाति, धर्म, वर्ग और सत्ता के बाकी आयामों से क्या जुड़ाव है? 'अच्छी औरत' की परिकल्पना में यौनिकता की क्या भूमिका है? जेंडर में विभिन्नता, अंतरजातीय, अंतरधार्मिक, समलैंगिक चाहतें एवं यौनिकता का अन्य अधिकारों से जुड़ाव।

इस लेख में मैं इस कार्यक्रम के तहत आयोजित कार्यशालाओं की एक झलक आपके साथ बांटना चाहूंगी।

यौनिकता से जुड़े मूल विचारों पर बातचीत करने के तरीकों में हमारे द्वारा अपनाया गया एक सबसे कारगर तरीका यह रहा था कि यौन और यौनिकता के विषय में बातें भोजन की मिसाल देकर की जाएं। ग्रामीण औरतें यौन संबंधी ज़रूरतों का वर्णन करते हुए अकसर जिस जुमले का इस्तेमाल करती थीं वह था — 'शरीर की भूख'। मसलन, एक प्रतिभागी ने कहा कि अगर कोई पांच रोटी खाना चाहे और उसे केवल दो मिलें, तो बाकी तीन रोटियां उसे कहीं से हासिल करनी होंगी, यहां तक कि ज़रूरत पड़ने पर पड़ोसी से लेनी होंगी। दूसरी ओर, अगर कोई औरत सात रोटियां खाने के लिये मजबूर की जाए तो उसे बदहज़मी हो जाएगी।

कार्यक्रम संचालकों के बतौर हम लोग भी प्रतिभागियों से खाने से जुड़े कई सवाल पूछते थे। आपको खाने में कौन सी चीज़ सबसे ज़्यादा पसंद है? खाने में आप किस चीज़ को सबसे ज़्यादा नापसंद करते हैं? क्या खाने में आपकी पसंद कभी बदली है? इत्यादि। उनके जवाबों में पैटर्न स्पष्ट तौर पर उभरने लगता था।

सबसे पहले स्वाद में हैरान कर देने वाली विविधता दिखती थी। दूसरे, पसंदगी और नापसंदगी की सूची बनाने पर कई खाने की चीज़ें दोनों सूचियों में साझा तौर पर दिखती थीं। 'मुझे जो पसंद है, तुम्हें उससे घृणा हो सकती है', यही पैटर्न स्पष्ट हो रहा था। पसंद की प्राथमिकताओं में इतनी विविधता होने के पीछे अकसर कोई वजह होती थी— किसी के कहीं रहने की वजह से या धर्म, जेंडर, जाति, क्षेत्र या वर्ग के लिहाज़ से सांस्कृतिक तौर पर क्या स्वीकार्य है या नहीं। यह भी स्पष्ट हो रहा था कि खाने के बारे में हमारी पसंद बदल जाती है।

फिर बातचीत इस ओर मुड़ जाती कि क्या यौनिकता के साथ हम इसकी कोई समानता देख पाते हैं। ये स्पष्ट था कि 'दोनों में संभावनाएं अनंत हैं'। यौनिकता और खाने के स्वाद में उभर कर आने वाली एक और समानता यह थी कि, 'मुझे जो पसंद हो उससे आपको अरुचि या यहां तक घृणा हो सकती है।' एक और समानता यह निकली कि यौन इच्छा और खाने की रुचि दोनों चंचल हैं, वे बदल सकती हैं। इन समानताओं की बात को बढ़ाते हुये हमने तर्क किया कि भोजन और स्वाद की तरह हालांकि यौनिकता प्राकृतिक और सहज प्रवृत्ति जैसी दिखती है लेकिन वह एक सामाजिक निर्मिति है। भोजन में स्वाद की तरह ही यौन इच्छाएं भी देह में, यानी कि जैविक दुनिया में बसी दिखती तो हैं, लेकिन वह जेंडर, वर्ग और क्षेत्र वगैरह से प्रभावित होती हैं।

अनेक समानताओं के बावजूद भोजन और यौनिकता में महत्त्वपूर्ण फ़र्क़ भी सामने आए। हम यौन व्यवहार पर उतनी सहजता से बात नहीं कर सकते जिस तरह भोजन की पसंद के बारे में करते हैं। भोजन से जुड़े स्वाद संबंधी फ़र्क़ को मोटे तौर पर सहन कर लिया जाता है (हालांकि राजनीतिक उबाल वाले किसी माहौल में, मसलन धार्मिक पहचान के संघर्ष के दौर में भोजन संबंधी पसंद का भारी प्रतीकात्मक महत्व हो सकता है)। लेकिन यौन इच्छाओं में पाये जाने वाले विभिन्न फ़र्क़ ऐसे अतिक्रमणकारी व्यवहार को न्योता दे सकते हैं जो बंदिश की शक्ल में मज़ाक उड़ाने से लेकर हत्या जैसी चरम हिंसा तक पहुंच सकती है।

कार्यशालाओं से जुड़ी अनेकों गतिविधियां है, लेकिन अब हमें बढ़ना होगा कार्यक्रम से उभरी मुख्य सीखों पर।

- यौनिकता के बारे में बात करना अत्यंत ज़रूरी है और वस्तुतः संभव भी- खासकर ग्रामीण महिलाओं के संदर्भ में जो ज़्यादातर मध्यवर्गीय शहरी प्रतिभागियों की तुलना में कहीं ज़्यादा सहज थीं।
- महिलाओं के साथ हिंसा क्यों होती है, वे इसको कैसे महसूस करती हैं और क्या वे इस हिंसा के घेरे से बाहर निकल सकती हैं — यौनिकता से जुड़े मुद्दों के साथ इन सारे सवालों का गहरा व करीबी रिश्ता है। कार्यक्रम में इस बात की झलक मिल सकी कि हम

कैसे क्षमता संवर्धन के ज़रिये महिला हिंसा पर अपनी पहलकदमियों को सुधार सकते हैं। एक भागीदार ने कहा, (हिंसा के मसले आने पर) "हम पहले हिंसा, खाने-पीने, कपड़ों की बात करते थे, लेकिन यौनिकता की कोई बात नहीं करते थे। मार-पीट सहन करने के बाद जब कोई औरत अपने पति के पास वापस लौटना चाहती, तो आम तौर पर हम कभी सहमत नहीं होते थे। लेकिन अब हम समझते हैं कि शायद उसे यौन सुख की भी ज़रूरत हो।"

- कार्यशालाओं से जुड़ी एक ट्रेनर ने कहा, "आर्थिक निर्भरता, परित्यक्ता से जुड़े कलंक, विवाह का भीतर तक आत्मसात किए गए महत्त्व जैसे कारकों को तो हम भली-भांति जानते और समझते हैं। कार्यशालाओं से जुड़ी इन कार्यशालाओं में यौनिकता के इस महत्वपूर्ण आयाम को भी समझने का मौका मिला।"
- महिला सशक्तीकरण के लिए यौनिकता का आयाम बेहद ज़रूरी है। एक तो क्योंकि यौन इच्छाओं की पूर्ति अपने आप में अभिव्यक्ति के लिए राह बनाने, ऊर्जा प्रदान करने और सशक्त करने वाली प्रक्रिया है और दूसरे चूंकि महिलाओं की यौनिकता पर नियंत्रण महिलाओं की गतिशीलता पर बंदिश लगाना है और स्वास्थ्य-सुरक्षा व शिक्षा तक उनकी पहुंच को भी बाधित करता है।
- यौनिकता के प्रति एक राजनैतिक रवैया अपनाने की ज़रूरत है। एक ऐसा नजरिया जो यौनिकता और सत्ता के विभिन्न स्वरूपों व तमाम अंतर्संबंधित आयामों के बीच के रिश्तों व कड़ियों की पहचान करता है— चाहे वह जेंडर, जाति और धर्म के रूप में हो या वर्ग संबंधी विचारधाराओं, भौतिक वास्तविकताओं और ढांचों के रूप में।

'जो व्यक्तिगत है, वह राजनीतिक है' ये नारा हमेशा महिला आंदोलन के केंद्र में रहा है। अब ज़रूरत है कि यौनिकता के आयाम को भी इसी नज़रिए से हम अपने काम और जीवन में उतारें।